भारतीय संस्कृति का विश्व में संचार

डा० श्री प्रकाश मिश्र
एसो० प्रोफेसर, बी०एड० विभाग,
एम०एल०के० पी०जी०कालेज बलरामपुर।

भारत की प्राचीन सभ्यता स्पष्ट रुप से सीमांकित एक उपमहाद्वीप में उदित हुई जिसके उत्तर को संसार की विशालतम एवं सर्वोच्च पर्वत श्रेणी हिमालय की श्रृंखला घेरे हुए है और जो अपने पूर्वी तथा पश्चिमी विस्तारों के साथ भारत को शेष एशिया तथा संसार से पृथक करती है। अवरोध की यह श्रृंखला किसी समय भी अलंघ्य नहीं रही और सभी युगों में परिव्राजी एवं व्यापारी दोनो ही ऊंचे और निर्जन दर्रों के मार्ग से भारत में आते रहे, जबकि भारतीयों ने व्यापार तथा संस्कृति का विस्तार अपनी सीमाओं के बाहर इन्हीं मार्गों से किया और सभ्यता के प्रारम्भिक युग से लेकर आज तक भारत के निवासियों ने एक संस्कृति का विकास किया है और उसे निरन्तर कायम रखा है। भारतीय संस्कृति कोई जड़ विचारधारा नही है बल्कि एक जीवित प्रक्रिया है। यह परिवर्तनशील परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालते हुए अधिक समृद्ध होती गई है। इसने सभी विरोधियों को स्वीकार किया है परन्तु उसकी आत्मा फिर भी अपरिवर्तित ही रही। उसकी आत्मा के दीपक की लौ कॉपी तो जरुर परन्तु कभी बुझी नहीं।

विदेशों में भारत के राजनैतिक एवं सांस्कृतिक प्रसार को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। पहला भाग हिमालय के पार की ओर तथा दूसरा भाग समुद्र के पार की ओर देश से सम्बन्धित है। भारतीय संस्कृति के प्रसार का विशेष श्रेय बौद्ध विद्वानों को प्राप्त है, जिन्होंने अपने मान्य धर्म का अनुवाद चीनी भाषा में करके उसे सुदूर पूर्व के देशों तक पहुंचाया था। भारतीय संस्कृति के विस्तार से परे, यदि सम्पूर्ण एशिया की संस्कृति का अध्ययन किया जाये तो इस परिणाम की प्राप्ति होती है कि सम्पूर्ण एशियाई संस्कृति के बीच एक विभाजन रेखा है, जिसके बाई ओर के देशों में श्रीलंका, वर्मा, स्याम, इंडोनेशिया हिन्दु चीन का कुछ भाग है और दूसरी ओर के देश में मध्य एशिया, कोरिया और जापान आदि है। पहले समूह पर भारतीय और दूसरे समूह पर चीनी प्रभाव के लक्षण पर्याप्त रुप से स्पष्ट है। यह प्रभाव रोचक भी है और गंभीर भी। इस सम्बन्ध में यह बात विशेष रुप से ध्यान में रखनी चाहिए कि किसी संस्कृति विषेष के विषयों में किसी दूसरी संस्कृति की अपेक्षा श्रेष्टता की दृष्टि से नहीं सोचना चाहिए। हर संस्कृति की अपनी विशेष लाक्षणिकताएं होती हैं और यदि कहा जाए कि अमुक संस्कृति अमुक संस्कृति से श्रेष्ठ है तो यह अच्छी बात नहीं है। फिर भी ऐसा कहने की इच्छा अदम्य रुप से उत्पन्न तो होती ही है। इस आलेख में हमारा लक्ष्य भारतीय संस्कृति का विश्व में संचार या प्रसार की मुख्य लाक्षणिकताओं का उल्लेख करना ही है।

रोम और चीन के बीच रेशम व्यापार के लिए प्रसिद्ध मार्ग पर स्थित होने के कारण मध्य एशिया अनेक संस्कृतियों का मिलन केन्द्र रहा है। मध्य एशिया में हिन्दू देवताओं की मूर्तियां, भारतीय शासकों की उपाधियां, पितृ सतात्मक व्यवस्था, दासों के क्रय विक्रय का उल्लेख, भारतीय पद्धति (संगीत, व्याकरण, ज्योतिष, नृत्य आदि) से परिचित होना तथा बारह नक्षत्रों/वाहों का उल्लेख यह प्रमाणित करता है कि यह भारतीय संस्कृति का प्रसार था।

चीन, कोरिया, जापान और मंगोलिया में भारतीय संस्कृति का प्रसार अधिकांषतः बौद्ध भिक्षुओं ने किया। इन

Scanned with OKEN Scanner

सारे देशों में प्राचीन काल में ऐसे भी प्रमाण मिलते हैं जो भारतीय संस्कृति के प्रसार की गाथा बयां करते है। प्रमाणों के सम्बन्ध में उल्लेख करना एक अलग अध्ययन की मांग करेगा।

दक्षिणी पूर्वी एशिया में आधुनिक ब्रहमा, मलाया, स्याम (थाइलैण्ड) और इंडोनेशिया बोर्नियो और फिलीपिंस द्वीप समूह सम्मिलित माने जाते हैं। इन सभी देशों की प्राचीन अनुश्रुतियों से प्रकट होता है कि इसमें से अधिकांश देशों में वहां के सबसे प्राचीन शासन और राज्य प्रवासी भारतीयों द्वारा स्थापित हुए थे। इंडोनेशिया का एक द्वीप बाली आज भी एक हिन्दू देश है। इन देशों की सभ्यता पर भारतीय संस्कृति का रंग ऐसा गहरा चढ़ा रहा है कि आज भी सब विद्वान उन्हें हिन्दू राज्यों की संज्ञा देते है। आरम्भ से ही यहां के हिन्दू राज्यों का समग्र सांस्कृतिक जीवन भारतीय पद्धति के राजतंत्र, संस्कृत भाषा और भारतीय लिपियों के प्रयोग, भारतीय मत मतान्तरो, पौराणिक परम्पराओं, मानव धर्म शास्त्र में वर्णित सामाजिक और नैतिक व्यवहार पर आधारित था। ब्रहमा (बर्मा) की भाषा लिपि, धर्म और सामाजिक जीवन पर भारतीय धर्म और संस्कृति की गहरी छाप आज भी द्रष्टव्य है। स्याम थाइलैण्ड की आधुनिक शब्दावली में पाली और संस्कृति के अनेक शब्द हैं। त्रिपिटक, वेद और स्मृति ग्रन्थों का वहां अध्ययन होता था। हिन्द चीन में भारतीयों का सबसे प्राचीन उपनिवेश चम्पा था जो कम्बोडिया के उत्तर-पूर्व में था। यहां संस्कृत भाषा, भारतीय देवी देवताओं तथा मन्दिर, ग्रन्थ आदि का मिलना तथा प्रसार इस बात का द्योतक है कि यहां भारतीय संस्कृति का झण्डा लहरा रहा था। कंबुज दक्षिण पूर्वी एशिया में भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था। वहां के जीवन पर भारतीय सभ्यता और संस्कृति की गहरी छाप है। भारतीय कला, भाषा, साहित्य, धर्म और संस्कृति का अन्य देशों की अपेक्षा जावा में अधिक विस्तृत रुप से प्रसार और समृद्धि हुई।

उपर्युक्त तथ्य विश्व में भारतीय संस्कृति के संचार की रुप रेखा प्रस्तुत करते हैं जिनका प्रमाण उपलब्ध है जो विस्तृत अध्ययन की मांग करता है तथापि भारतीय संस्कृति का यह प्रसार किसी भारतीय साम्राज्य की सत्ता के आधार पर नहीं बल्कि भारत के साहसी श्रमणकारियों, व्यापारियों, विद्वानों और धर्म प्रचारकों के प्रयासों द्वारा हुआ। इन देशों के राज्यकाल और अभिजात वर्ग भारतीय मत मतान्तरों को मानते थे।

यह भी स्पष्ट है कि इन देशों में सारे ऐतिहासिक काल में भारत और चीन की संस्कृतियों का संघर्ष रहा लेकिन भारतीय प्रभाव का प्राधान्य रहा है और भारतीय संस्कृति के प्रसार के कारण ही इन्हें चीनी साम्राज्य और संस्कृति हड़प न सकी। भारतीय संस्कृति का विदेशों में संचार/प्रसार से न केवल यह प्रकट होता है कि भारतीय प्रभाव किस सीमा तक बढ़ा हुआ था अपितु एक लघु भारत का ही चित्र उपस्थित हो जाता है। भारतीय संस्कृति का संचार और प्रभाव कहीं बहुत तीव्र और गहरा रहा और कहीं उसे स्थानीय प्रभाव से समन्यव करना पड़ा तथा अन्त में जाकर स्थानीय संस्कृति की विजय हुई क्योंकि भारतीय के मातृ भूमि से सम्पर्क टूट गये और अन्य नये सम्पर्क बन गये। परन्तु उसका अर्थ यह नहीं है कि वहां भारतीय प्रभाव समाप्त हो गया।

प्राचीन सन्दर्भों के अतिरिक्त वर्तमान के सन्दर्भों पर ध्यान केन्द्रित करें तो भारतीय संस्कृति के अनेक तत्व एवं लक्षण ऐसे हैं जो उसे विश्व में अपनी पहचान बनाने में मदद करते हैं तथा उनका संचार विश्व में जनमानस को झंकृत करता रहा है। प्रायः यह कहा जाता है कि भारत में प्रकृति की स्थिति एवं भारत का मानसून पर पूर्णतः आश्रित होना देशवासियों के चरित्र गठन में सहायक हुआ है। अनेक अन्य पुरातन सभ्यता वाले देशों जैसे यूनान, रोम और चीन के

Scanned with OKEN Scanner

निवासियों को कठोर शीत से ही संतुष्ट होना पड़ता था जिससे उन्हें दृढ़ता एवं साधन सम्पन्नता की प्रेरणा मिली। इसके विपरीत भारत के ऊपर प्रकृति के वरदहस्त की छाया थी जो मानव के जीवन यापन की सामग्री देकर प्रतिकार में कुछ भी आशा नहीं करती परन्तु जिसे अपने भीषण प्रकोप में किसी भी मानव प्रयत्न द्वारा शान्त नहीं किया जा सकता। अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय चरित्र इसी कारण शान्ति प्रिय एवं भाग्यवादी तथा जीवन के सुख दुख को बिना किसी आपत्ति के सहन करने का अभ्यस्त बन गया है।

यह निर्णय कहा तक उचित है इसमें सन्देह है यद्यपि जीवन के प्रति शान्ति प्रियता का तत्व प्राचीन भारतीय विचार धारा में निश्चित रुप से विद्यमान था और आज भी है परन्तु नीतिज्ञों ने उसे कदापि स्वीकार नहीं किया है। प्राचीन भारत के महान सामरिक कार्य उसके सिंचाई के महान साधन, भव्य मन्दिर एंव विशाल क्रमबद्ध सैनिक आक्रमण देशवासियों की निष्क्रियता की ओर संकेत नहीं करते हैं। यदि भारतीय चरित्र पर जलवायु कोई प्रभाव रहा है तो हमारा विश्वास है कि वह सुविधा और सरलता के प्रति प्रेम का विकास अर्थात प्रकृति द्वारा मुक्त रुप से प्रदत्त सरल आनन्द के प्रति आसक्ति ही है। इस प्रवृति की स्वाभाविक प्रक्रिया एक ओर आत्म त्याग और सन्यास की भावना तथा दूसरी ओर समय समय पर कठोर श्रम साध्य चेष्टा रही हैं।

भारतीय संस्कृति की एक सबसे बड़ी विशेषता विविधता है जो विश्व में अपनी अलग पहचान बनाता है। भारतीय संस्कृति ने विविधता को जो मान्यता दी है वह किसी राजनीतिक अथवा समझौता वादी दृष्टिकोण अपनाने के कारण नहीं दी है। भारतीय मनीषा के लिए विविधता तो एक माया है। एक आरोपित अर्थात मन द्वारा प्रक्षेपित भावदशा। पश्चिम विशेष कर इसाई व यहूदी संस्कृति की दृष्टि में भौतिक वाद से जुड़ा व्यक्ति आध्यत्मिक हो ही नहीं सकता, परन्तु ऐसी मान्यता पर भारतीय संस्कृति का विश्वास नहीं है। भारतीय मनीषा ने भौतिकता की समृद्धि और अर्थ पक्ष को एक पुरुषार्थ के रुप में देखा हैं। पुरुषार्थो से ही मानव संस्कारवान बनता हैं। पुरुषार्थ ही मानव सभ्यता के विकास की वास्तविक सीढ़ी है और मानव का यह पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के रुप में अभिव्यक्ति होता है। शुद्ध भौतिकवाद के लिए अर्थात केवल अर्थ प्रधान जीवन के लिए भारतीय संस्कृति में कोई स्थान नहीं है। यही भाव आज के पश्चिमी भौतिकवादी देशों में भारतीय संस्कृति के संचार के प्रबल तत्व है। भारतीय संस्कृति के प्रति विश्व के अन्य देश मोक्ष प्रदान करने वाले, शान्ति प्रदान करने वाले, आनन्द प्रदान करने वाले तत्व के रुप में देख रहे हैं तथा उसे आत्मसात करने का प्रयास कर रहे हैं।

भारत जिस संस्कृति पर आस्था रखता है वह मानव मानव के बीच कलुष और असहिष्णुता प्रधान भेद को मान्यता नहीं देता। उसमें विविधता व अनेकता के लिए स्थान है और सम्मान है। इस संस्कृति को ही भारत में भारतीयता कह कर सम्बोधित किया जाता है जो विश्व में अपनी पहचान बनायें हुए है। आज विश्व के विकसित व शिखर राष्ट्र विश्व बन्धुत्व और अन्तर्राष्ट्रीयता की बात कर रहे है पर अन्दर ही अन्दर स्वयं के हित को महत्व दे रहें हैं। मानव कल्याण के लिए वे हृदय से तत्पर ही नही है जो भारतीय संस्कृति के बिलकुल विपरीत है। भारतीय संस्कृति का यह स्वरुप है कि हमारे देश के सभी मजहबों और धर्म के लोग सांस्कृतिक रुप से एक ही विरासत के वारिस हैं। इस सांस्कृतिक तथ्य के आधार पर भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रचार-प्रसार हो रहा है। आज विश्व के विकसित व शिखर राष्ट्र विकसित राष्ट्रों में भारत के लोग अपनी संस्कृति के माध्यम से विश्व को एक संदेश दे रहे हैं। भारतीय संस्कृति के

Scanned with OKEN Scanner

तत्वों को ग्रहण करने के लिए भारत से नये गुरुओं की मांग यह साबित करती है कि भारतीय संस्कृति श्रेष्ठ है और उसमें मानव कल्याण की क्षमता है। अत्यन्त संक्षेप में कहें तो भारतीय संस्कृति में मनुष्य का परमोद्देश्य दैविक, दैहिक एवं भौतिक आपदाओं की आत्यान्तिक निवृत्ति तथा शाश्वत सुख स्वरुप परम पुरुशार्थ मोक्ष की प्राप्ति है। मानव जीवन के उत्कर्ष का यही चरमोन्नयन है। यही तथ्य भारतीय संस्कृति के विश्व में संचार का एक प्रबल संबल बनता जा रहा है।

संदर्भ-

1. गुप्त हीरा लाल : प्राचीन भारत के आधुनिक इतिहासकार, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 1990।
2. वासम ए.एल. : अनुवाद- वेंकटेश चन्द पाण्डेय, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा-3
3. Jha, D.N. : Ancient India- An Introductory outline, Peoples Publishing House New Delhi 1983
4. Majumdar, R.C : The Classical Age, Bhartiya Vidya Bhawan, Bombay 1970.
5. Sen, S.P. Edited : Historians and Historiography in Modern India 1973.
6. Sharma, R.S. edited : Indian society : Historical Probings in memory of D.D. Kaushambi 1974.
7. Srivastav, A.N. : Historiography, 1985.

Scanned with OKEN Scanner